IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume11, S.Iss 07, 2022

साहित्य और करुणा

राकेश कुमार,

शोध छात्र ,हिंदी विभाग ,निर्वाण विश्वविद्यालय ,आगरा रोड, जयपुर , (राजस्थान) ,भारत (Email :Rakeshgalib@gmail.com)

डॉ पूनम लता मिड्डा, प्रोफेसर, हिंदी विभाग ,निर्वाण विश्वविद्यालय ,आगरा रोड, जयपुर , (राजस्थान) ,भारत

करुणा और मनुष्य का जन्मजात से ही एक अट्टू रिश्ता हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । करुणा एक स्वाभिक इंद्रिय भाव है जो मानव जीवन के जन्म के साथ-साथ उसके रचनात्मक और भौतिक शरीर में बाल्यकाल से ही विद्यमान रहता है और मृत्यु तक यह सभी भाव उसके शरीर में जीवित रहतें है जिसमे करुण-भाव भी मुख्य रूप से आजीवन मौजूद रहता है।

करुण रस परिभाषा :-

सभी करण रस रसों में सर्वश्रेष्ठ है। महान कवि भवभूति भी इसे "एको रता करुणा एव" कहकर प्रमाणित करते हैं। उनके अनुसार, करुणा ही एकमात्र स्वाद है। अन्य स्वाद इसमें निहित हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यावहारिकता समाज का प्राणतत्व है। समाज में सामंजस्य और सहयोग की भावना रखने के लिएz करुणामय एवं परोपकारी जीवन अपनाना उसका धर्म है। करुण रस वस्तुतः कवि तथा सहृदय पाठक दोनों को प्रभावित करता है। जिस पर करना की जाती है उस पर और जो करुणा करने वाला है, वह दोनों ही उत्सते उपकृत होते हैं। करुणा का रसखान दोनों को समानता से तृप्त करता है। करुणा मानव जीवन का आभूषण है। यह मनुष्य को मानतिक और आदिक दोनों हो प्रकार की शान्ति प्रदान करती है। प्रत्येक सहृदय पाठक इससे अभिभूत होकर शुभकर्म और प्रवृत्त होता है। मानव मन की प्रेरणादायिनी शक्ति यही करुणा है, जो तमधानुसार पृष्ट होकर मानव को शुभकर्म की और लगाती रहती है। मानवत्व का स्थापन में इती करुणा के द्वारा होता है।[1]

जहाँ पर पुनः मिलने कि आशा समाप्त हो जाती है करुण रस कहलाता है। इसमें निःश्वास, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि का भाव व्यक्त होता है। किसी प्रिय व्यक्ति के चिर विरह या मरण से जो शोक उत्पन्न होता है उसे करुण रस कहते है। धनंजय, विश्वनाथ आदि संस्कृत आचार्यों ने करुण रस के उत्पादक विविध कारणों को संक्षिप्त करके 'दृष्ट-नाश' और 'अनिष्ट-आप्ति' इन दो संज्ञाओं में निबद्ध कर दिया है, जिनका आधार उक्त नाट्यशास्त्र में ही मिल जाता है।

धनंजय के अनुसार करुण रसः-

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume11, S.Iss 07, 2022

'इष्टनाशादनिष्टाप्तौ शोकात्माकरुणोऽनुतम् विश्वनाथ के अनुसार करुण रसः - 'इष्टनाशादानिष्टपतेः करुणाख्यो रसो भवेत'।[2] हिन्दी के अधिकांश काव्याचार्यों ने इन्हीं को स्वीकार करते हुए करुण रस का लक्षण रूढ़िगत रूप में प्रस्तुत किया है।

चिन्तामणि के अनुसार-

'इष्टनाश कि अनिष्ट की, अगम ते जो होइ।' दुःख सोक थाइ जहाँ, भाव करुँ सोइ'।

देव के अनुसार-

'विनठे ईठ अनीठ सुनि, मन में उपजत सोग। आसा छूटे चार विधि करुण बखानत लोग ।

कुलपति मिश्र ने 'रसरहस्य' में भरतमुनि के नाट्य के अनुरूप विभावों का उल्लेख किया है।

केशवदास ने 'रसिकप्रिया' में 'प्रिय के बिप्रिय करन' को ही करुण की उत्पत्ति का कारण माना है।

'यम' के स्थान पर 'वरुण' को मान्यता प्रदान की है और इस प्रकार भरत से जहाँ तक करुण रस के देवता का प्रश्न है, हिन्दी के कवियों ने अधिकतर लेकर विश्वनाथ तक की परम्परा से भिन्न पथ का अनुसरण किया है। करुण रस के उद्दीपन विभाव का निरूपण प्रायः 'साहित्यदर्पण' के 'दाहादिकावस्था भवेदुद्दीपनम्' के प्रभावों से किया गया है।[3]

करुण रस परिभाषा :-

जहाँ पर पुनः मिलने कि आशा समाप्त हो जाती है करुण रस कहलाता है। इसमें निःश्वास, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि का भाव व्यक्त होता है। किसी प्रिय व्यक्ति के चिर विरह या मरण से जो शोक उत्पन्न होता है उसे करुण रस कहते है। धनंजय, विश्वनाथ आदि संस्कृत आचार्यों ने करुण रस के उत्पादक विविध कारणों को संक्षिप्त करके 'दृष्ट-नाश' और 'अनिष्ट-आप्ति' इन दो संज्ञाओं में निबद्ध कर दिया है, जिनका आधार उक्त नाट्यशास्त्र में ही मिल जाता है। प्रिय वस्तु या व्यक्ति के नष्ट होने से अप्रिय वस्तु या व्यक्ति के मिलने से मन में जो खिन्नता या दुःख पैदा होता है उसे शोक कहते हैं। शोक का भाव प्रिय वस्तु के न मिलने की आशा से भी होता है। जब इस शोक भाव को विभाव, अनुभाव एवं संचारियों द्वारा जागृत कर अभिव्यक्त किया जाता है तब यह करुण रस का रूप धारण कर लेता है।

करुण रस में शोक स्थायीभाव रहता है, आश्रय शोक संतप्त व्यक्ति होता है, आलम्बन विभाव नष्ट प्रिय वस्तु या व्यक्ति रहता है तथा उद्दीपन विभाव से प्रिय का दाह, विलाप, रात्रि, एकान्त, श्मशान तथा उस प्रिय की वस्तुएं आदि रहती हैं। अनुभाव में रोना, पीटना, पछाड़ खाना, आहें भरना आदि आता है। संचारी भावों

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume11, S.Iss 07, 2022

में विकलता, मोह, ग्लानि, व्याधि, स्मृति, जड़ता आदि प्रयोग होते हैं। करुण में प्रिय के मिलन की आशा नहीं रहती।

श्यामों भवति श्रीङ्गार सितो हास्य प्रकीर्तितः । कपोतः करुणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्तितः ।[4]

"भरतमुनि ने कपोत को करुण का वर्ण निर्धारित किया है अलङ्कार शास्त्रों में भी करुण के कपोत वर्ण का वर्णन प्राप्त होता है। करुण रस के कपोत वर्ण होने का तात्पर्य किञ्चित मलिनता से है। अतः शोकाकुल प्राणियों में मलिनता स्पष्ट प्रकट होती है। रसों के अधिकारी देवताओं के अनुसार रसों के वर्ण पूजा आदि के अवसर पर उनके ध्यान करने में उपयोगी हैं।

आचार्य भानुदत्त एवं पंडितराज जगन्नाथ ने वरुण को करुण रस का देवता माना है। वरुण तथा जल दोनों में द्रवत्व गुण भगवान होने के कारण ही वरुण रस के देवता के रूप में वरुण को स्वीकार किया गया है। महाकरुणो त्पादक मृत्यु के अधिष्ठाता यम को विभिन्न आचार्यों ने करुण रस का देवता माना है। वरुण एवं यम में लोक-विश्रुत साचर्य है।

धनंजय के अनुसार करुण रस:-

'इष्टनाशादनिष्टाप्तौ शोकात्माकरुणोऽनुतम् विश्वनाथ के अनुसार करुण रसः - 'इष्टनाशादानिष्टपतेः करुणाख्यो रसो भवेत'। हिन्दी के अधिकांश काव्याचार्यों ने इन्हीं को स्वीकार करते हुए करुण रस का लक्षण रूढ़िगत रूप में प्रस्तुत किया है।

चिन्तामणि के अनुसार-

'इष्टनाश कि अनिष्ट की, अगम ते जो होइ।' दुःख सोक थाइ जहाँ, भाव करुँ सोइ'।

देव के अनुसार-

'विनठे ईठ अनीठ सुनि, मन में उपजत सोग। आसा छूटे चार विधि करुण बखानत लोग ।

कुलपति मिश्र ने 'रसरहस्य' में भरतमुनि के नाट्य के अनुरूप विभावों का उल्लेख किया है।

केशवदास ने 'रसिकप्रिया' में 'प्रिय के बिप्रिय करन' को ही करुण की उत्पत्ति का कारण माना है।[5]

'यम' के स्थान पर 'वरुण' को मान्यता प्रदान की है और इस प्रकार भरत से जहाँ तक करुण रस के देवता का प्रश्न है, हिन्दी के कवियों ने अधिकतर लेकर विश्वनाथ तक की परम्परा से भिन्न पथ का अनुसरण किया है। करुण रस के उद्दीपन विभाव का निरूपण प्राय: 'साहित्यदर्पण' के 'दाहादिकावस्था भवेदुद्दीपनम्' के प्रभावों से किया गया है ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक मैथलीशरण गुप्त के इस श्लोक से करुण रस का एक अन्य उदाहरण :-

'करुणे, क्यों रोती है ?

उत्तर में और अधिक तू रोई ।

मेरी विभूति है जो, उसको भवभूति क्यों कहे कोई ?' ।

भाव- इस मूर्ति में करुणा रस है, इसका वर्णन किया गया है कि उत्तर रामचरित नाटक में करुणा अधिक रोई है। इस रोने का कारण पूछा गया तो करुणा कहती है-उस नाटक की महत्ता मेरी विभूति के कारण ही दुनिया में हुई, उसे कवि भवभूति की विभूति कहते हैं। भवभूति संसार की विभूति नहीं, न शिव की विभूति है। किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु के नष्ट होने या अनिष्ट के संकट से जगे शोक स्थिर भाव का विभावादि से पुष्ट होने पर करुण रस प्रक्षेप होता है।

.तुलसीदास का करुण रस का उदाहर इस दोहे में देखने को मिलता है

'मुख मुखाहि लोचन सर्वहि सोक न हृदय समाई।'

मनहूँ करुण रस कटकै उत्तर अवध बजाई।

भावार्थ:-सबके मुख सूखे जाते हैं, आँखों से आँसू बहते हैं, शोक हृदय में नहीं समाता। मानो करुणा रस की सेना अवध पर डंका बजाकर उतर आई हो सब मेल मिल गए थे (सब संयोग ठीक हो गए थे), इतने में ही विधाता ने बात बिगाड़ दी ! जहाँ-तहाँ लोग कैकेयी को गाली दे रहे हैं! इस पापिन को क्या सूझ पड़ा जो इसने छाए घर पर आग रख दी ॥ प्रस्तुत दोहे में करुण रस का संचार हो रहा है।

रामचन्द्र शुक्ल का करुण रस

रामचन्द्र शुक्ल ने ऐसे ही स्थलों को ध्यान में रखकर करुण और विप्रलम्भ का अन्तर बताते हुए लिखा है कि वियोग में प्रिय के अपने से बिछुड़ने की विह्वलता प्रधान होती है, किन्तु शोक में अपने कष्ट की भावना उतना काम नहीं करती, जितना प्रिय के कष्ट की चेतना जी को जलाती है। इसमें भी भाव की प्रधानता और अप्रधानता के आधार पर ही करुण और श्रृंगार के बीचअन्तर करने की पुष्टि होती है।

केशवदास ने वियोग श्रृंगार के चार भेदों में एक करुण भी रखा है, जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों की सीमा एक बिन्दु पर मिल जाती है। करुण रस के साथ जो इससे भी महत्त्वपूर्ण समस्या सम्बद्ध रही है, वह है दुःख के द्वारा आनन्द की उपलब्धि की।

करुण रस के अन्य उदाहरण:-

1.हाय राम कैसे झेलें हम अपनी लज्जा अपना शोक गया हमारे ही हाथों से अपना राष्ट्र पिता परलोक

2.हुआ यह भी भाग्य अभागा किस पर विकल गर्व यह जागा रहे स्मरण ही आते सखि वे मुझसे कहकर जाते

3.अभी तो मुकुट बंधा था माथ हुए कल ही हल्दी के हाथ खुले भी न थे लाज के बोल खिले थे चुम्बन शून्य कपोल

करुण रस के आसान उदाहरण:-

4.धोखा न दो भैया मुझे, इस भांति आकर के यहाँ मझधार में मुझको बहाकर तात जाते हो कहाँ ?

5. सीता गई तुम भी चले मै भी न जिऊंगा यहाँ सुग्रीव बोले साथ में सब (जायेंगे) जाएँगे वानर वहाँ

6. दुःख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ, आज जो नहीं कहीं।

7.रही खरकती हाय शूल-सी, पीड़ा उर में दशरथ के ग्लानि, त्रास, वेदना - विमण्डित, शाप कथा वे कह न सके।

करुण रस का उदाहरण स्पष्टीकरण सहित

7 .हाय रुक गया यहीं संसार बना सिंदूर अनल अंगार वातहत लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार ! - सुमित्रानंदन पंत

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume11, S.Iss 07, 2022

स्पष्टीकरण- इन पंक्तियों में 'विनिष्ट पति आलम्बन तथा मुकुट का बंधना, हल्दी के हाथ होना, लाज के बोलों का ना खुलना' आदि उद्दीपन है। 'वायु से आहत लतिका के समान नायिका का बेसहारे पडे होना' अनुभाव तथा उसमें विषाद, दैन्य, स्मृति, जड़ता आदि संचारियों की व्यंजना है। इस प्रकार करुणा के सम्पूर्ण उपकरण और शोक नामक स्थाई भाव इस पद्य को करुण रस दशा तक पंहुचा रहे है।

निराला और महादेवी वर्मा, इनके काव्य में वेदना की अभिव्यंजना हुई है। कवि के अकेली दुनिया में सर्वाधिक प्रभावित करनेवाली शोक दशा या करुणा का भाव होता है। यह शोक ही पंत के काव्य में परिभाषा बनकर इस प्रकट हुआ है-

'वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान'

वियोग की आह नेत्रों के आंसू बनकर कविता बन गई। ऐसी भी दशा है कि दुःख मिला तो उसे कहा ही नहीं। निराला की मर्मभेदी उक्ति -
'दुख ही जीवन की कथा रही / क्या कहूं आज जो नहीं कही।'

यहां कवि कह रहे है कि दुख ही उनके जीवन की कथा है, अर्थात् जीवन ही दुखमय है। 'सरोज- स्मृति' सरोज की मृत्यू पर लिखी गई कविता है। उसकी मृत्यू पर कवि द्रवित हो उठा है। वेदना और करूणा ने उनके व्यक्तिगत जीवन का बहुत-सा हिस्सा बाँट लिया ऐसा दिखाई देता है।

हिंदी काव्य में करुणा का उद्भव और विकास -

भारतीय वाडमय में काव्य यात्रा का प्रारंभ शोक से हुआ। आदि कवि वाल्मीकि को क्रौंच की मृत्यू ने तथा क्रौंची की चीत्कार ने द्रवित कर दिया जिससे श्लोक बन गया। जैसे क्रौंची का विलाप आदि कवि को द्रवित कर गया वैसे ही कालिदास ने मेघदूत में यक्ष के विलाप से व्यथित होकर मेघदूत काव्य की रचना की। देवदत्त द्वारा घायल किया गया राजहंस गौतम की करुणा का आलंबन बना। प्रल्हाद को संकट में देखकर खंबे से रक्षक के रूप में नरसिंह रूप में विष्णु का प्रकट होना। द्रौपदी के चीर हरण के प्रसंग में उसकी पुकार पर कृष्ण का चीर बढ़ाते जाना। ऐसे उदा. है जो दुःखियों को साहस और सहारा देते है। साथ ही दूसरों का दुःख देखकर उसकी सहायता के लिए प्रेरित हो उठने की सीख भी देते हैं। रोगी, वृध्द, प्रेत, संन्यासी ये चार दृश्य देखकर गौतम का हृदय करूणा से विगलित हो गया और उसने राजत्याग कर दिया। अतः स्पष्ट है कि करूणा भाव इंसान को इंसानियत से जोड़ता है ।दार्शनिक या आध्यात्मिक आधारस्तंभ महाराष्ट्र के तुकाराम, रामदास, बंगाली विश्व के चिंतक तथा करुणा के सागर विवेकानंद, महर्षि अरविंद घोष, दयानंद सरस्वती, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इनकी मानवीय करूणा में वैश्विक मानवतावाद का शंखनाद है। जो आगे चलकर महात्मा गांधी तथा विनोबा भावे में अवतरित हुई। इसकी कलात्मक परिणती हर युग में दिखाई देती है। किंतु समकालीन साहित्य में इसकी परिणती ज्यादा दिखाई देती है। हिंदी साहित्य में भक्तिकाल से काव्य में करुणा का स्रोत उमड़ पड़ा है। हिंदी साहित्य की काव्य यात्रा को देखने पर पता चलता है करुणा के (व्यष्टि से समष्टि में परिवर्तित) स्वरूप में बदलाव आया है।

करुणा और साहित्य

भारतीय साहित्य में काव्य-यात्रा वाल्मीकि से प्रारंभ हुई। उनका करुणा विगलित स्वर विश्व का आदि श्लोक था। कारूण्यपूर्ण साहित्य की परंपरा स्वातंत्र्योत्तर काल में तो ज्यादा ही पनप रही है। प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय की व्यथा की कथा प्रस्तुत करता है। हम देखते है कि इंसान को सुखान्त काव्य की अपेक्षा दुखान्त काव्य अधिक आकर्षित करता है। इंसान के हृदय में अनेक भाव होते है, जो प्रसंग और परिस्थिति के अनुरूप उत्पन्न होते है। उसी के अनुरूप वह कार्य करता है। जब वह दूसरों को दुःखी, असमर्थ, असहाय अथवा संकट में पड़ा हुआ देखता है तब वह स्वयं दुःखी हो जाता है। क्योंकि वह सोचता है कि अगर उसकी जगह मैं होता और यह आपत्ति मुझ पर आती तो? उसकी इस सोच से ही उसके मन में करूणा की उत्पत्ति होती है। दूसरों के दुःखों, कष्टों से उसका हृदय द्रवित हो उठता है और दुःख निवारण के लिए वह परोपकार से प्रेरित होकर कार्य करता है। उसका दुःख दूर करके उसे सुख-साधन उपलब्ध करा देना उसकी इंसानियत को प्रदर्शित करता है। उसकी इंसानियत, संवेदनशीलता के कारण ही 'स्व' से उपर उठकर कार्य करता है। इससे स्पष्ट है कि दुःख देखकर करूणा, सेवाभाव, दया जागृत होना ही इंसान को मानवतावादी बनाता है।

करूणा का पात्र या विषय जितना ही अज्ञात होता है, करूणा का दायित्व भी उतना ही सात्विक होता है। जब व्यक्ति अपने परिचितों के संकट में सहायता करता है तो वह मात्र सामाजिक संबंधों का निर्वाहमात्र है। लेकिन जिससे हम अपरिचित है उसके कष्ट या दुःख सहभागी होना तथा उसकी सहायता के लिए प्रेरित हो उठना ही करूणा का क्षेत्र है। कवियों के व्यक्तित्व में निहित करुणा उन्हें जनसामान्य के कष्ट, अभाव, शोषण, अन्याय और अत्याचार के प्रति संवेदनशील बनाती है। उनकी वेदना की अभिव्यक्ति जनसामान्य को संकटों और संतापों से छुटकारा दिलाने के लिए कटिबध्द हो जाती है। अतः वह उनका वैयक्तिक स्वर न होकर जनकल्याण का स्वर होता है। 'स्वार्थ' से हटकर 'परमार्थ' की जनकल्याण की भावना ही मनुष्यत्व का उत्थान कर सकती है। करुणा अपना बीज अपने आलंबन या पात्र में नहीं फेंकती है अर्थात् जिस पर करुणा की जाती है वह बदले में करुणा करनेवाले पर भी करुणा नहीं करता-जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है-बल्कि कृतज्ञ होता अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है। बहुत-सी औपन्यासिक कथाओं में यह बात दिखाई गई है कि युवतियाँ दुष्टों के हाथ से अपना उद्धार करनेवाले युवकों के प्रेम में फँस गई हैं। कोमल भावों की योजना में दक्ष बँगला के उपन्यास-लेखक करुणा और प्रीति के मेल से बड़े ही प्रभावोत्पादक दृश्य उपस्थित करते हैं।

मनुष्य के प्रत्यक्ष ज्ञान में देश और काल की परिमिति अत्यंत संकुचित होती है। मनुष्य जिस वस्तु को जिस समय और जिस स्थान पर देखता है उसकी उसी समय और उसी स्थान की अवस्था का अनुभव उसे होता है। पर स्मृति, अनुमान या दूसरों से प्राप्त ज्ञान के सहारे मनुष्य का ज्ञान इस परिमिति को लाँघता हुआ अपना देशकाल-संबंधी विस्तार बढ़ाता है। प्रस्तुत विषय के संबंध में उपयुक्त भाव प्राप्त करने के लिए यह

विस्तार कभी-कभी आवश्यक होता है। मनोविकारों की उपयुक्तता कभी-कभी इस विस्तार पर निर्भर रहती है। किसी मार खाते हुए अपराधी के विलाप पर हमें दया आती है, पर जब हम सुनते हैं कि कई बार वह बड़े-बड़े अपराध कर चुका है, इससे आगे भी ऐसे ही अत्याचार करेगा, तो हमें अपनी दया की अनुपयुक्तता मालूम हो जाती है। ऊपर कहा जा चुका है कि स्मृति और अनुमान आदि भावों या मनोविकारों के केवल सहायक हैं अर्थात् प्रकारांतर से वे उनके लिए विषय उपस्थित करते हैं। वे कभी तो आप-से-आप विषयों को मन के सामने लाते हैं, कभी किसी विषय के सामने आने पर उससे संबंध (पूर्वापर व कार्य-कारण-संबंध) रखनेवाले और बहुत-से विषय उपस्थित करते हैं जो कभी तो सब-के-सब एक ही भाव के विषय होते हैं और उस प्रत्यक्ष विषय से उत्पन्न भाव को तीव्र करते हैं।[6]

उपसंहार

इस प्रकार, करुणा रस की सर्वव्यापकता के साथ-साथ, करुणा रस के बारे में सबसे महत्वपूर्ण समस्या यह रही है कि पीड़ा के माध्यम से आनंद कैसे प्राप्त किया जाए। संस्कृत काव्यशास्त्र में सभी अनुभूतियों को आनंददायी माना गया है। फलत: सैद्धान्तिक दृष्टि से हृदय को करुणामय स्वाद के निर्वहन से आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए, परन्तु कुछ विद्वानों ने इस प्रत्यक्ष अनुभूति के आधार पर विभिन्न सारणियों द्वारा समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कुछ विद्वान आनन्द की प्राप्ति को ही आनन्द की प्राप्ति मानते हैं। दुःख की प्राप्ति ही संभव मानते हैं।[7]

करूणा की व्युत्पत्ति, उसकी परिभाषाएं, उसका स्वरूप, उसका महत्व और हिंदी काव्य में करुणा का उद्भव और विकास आदि को विश्लेषित किया है। करूणा यह भाव किसी दूसरे के दुःख के ज्ञान से उत्पन्न होकर उसका दुःख दूर करने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी असमर्थ, असहाय, दुःखी अथवा संकट में पड़े हुए व्यक्ति को देखकर उसके दुःख को दूर करने की प्रेरणा करुणा के कारण ही मिलती है। अतः मानव में मानवता की प्रतिष्ठापना करने का महत् कार्य करूणा के कारण ही होता है। प्रस्तुत अध्याय में करुण रस का अर्थ स्वरूप और उसके प्रयोगात्मक पहलुओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया प्रस्तुत शोध का मुख्य विषय करुणा है जो मुझे गुलज़ार के व्यक्तित्त्व और उनकी सभी विधाओं में करुणा को ढूँढना है जो गुलज़ार की सभी विधाओं में देखने को मिलती है।

कवि वाल्मीकि का करुणा विगलित स्वर विश्व का आदि श्लोक था। अतः करुणा भाव किसी अपने के दुःख को देखकर ही नहीं बल्कि किसी पराये को दुःख को देखकर भी उमड़ पड़ता है। यही भाव इस तरह से इंसान का इंसानियत के साथ जोड़ता है। अतः मनुष्य के चरित्र में उसे मनुष्यता की उत्तम कोटि प्रदान करनेवाला यही मनोविकार है। वाल्मीकि, कालिदास, पंत, निराला आदि कवि ने शोक से द्रवित होकर काव्य की रचना की है। जिसने साहित्य में श्रेष्ठता प्राप्त की है। करूणा में न कुछ की प्रवृत्ति होती है। हमारी निस्वार्थ सेवा ही हमारा पारितोषिक होता है। मानवता की सेवा के लिए प्रेरित करने वाला यह भाव ही 'वसुधैव कुटुंबकम्' का आधार है। यही कारण है कि भवभूति ने भी करुण रस ही एक मात्र रस माना है।

संदर्भ ;-

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume11, S.Iss 07, 2022

1. कुमारी पुष्पा ,प्रसाद के काव्य तथा नाट्य साहित्य शोध प्रबंध ,कानपूर विश्वविद्यालय , 1984,पृष्ठ -483

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल चिंतामणि भाग –एक सस्ता मंडल प्रकाशन ,नई दिल्ली , 2021, पृष्ठ -43.

3 http;//mycoaching.in..रस. दिनांक 08-12-24 को सायं 10:30 पर उद्धृत

4 मनोज कुमार गुप्ता ,प्रमुख महाकाव्यों में करुण रस शोध प्रबंध ,महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ ,2010 ,पृष्ठ-49

5 http;//mycoaching.in..रस. दिनांक 16-12-24 को सायं 06:21 पर उद्धृत

6 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल चिंतामणि भाग –एक सस्ता मंडल प्रकाशन ,नई दिल्ली , 2021, पृष्ठ -49.

7 मनोज कुमार गुप्ता ,प्रमुख महाकाव्यों में करुण रस शोध प्रबंध ,महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ ,2010 ,पृष्ठ-28